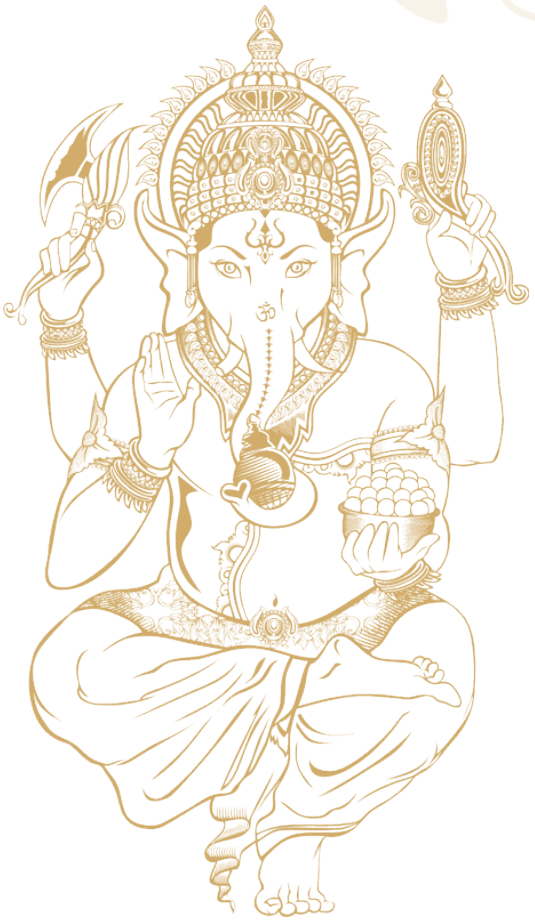

Akash

02 Apr 2006

02:54 AM

Kolkata

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119985401

तिथि 02/04/2006 **समय** 02:54:00 **वार** रविवार **स्थान** Kolkata **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:56:38
अक्षांश 22:34:00 उत्तर **रेखांश** 88:21:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:23:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	15:57:46 घं
वेलान्तर	00:03:40 घं
सूर्योदय	05:29:53 घं
सूर्यास्त	17:51:38 घं
चैत्रादि संवत	2063
शक संवत	1928
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	4
नक्षत्र	कृतिका
योग	प्रीति
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरूड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	उ-उदय
पाया(रा.-न.)	रजत-स्वर्ण
होरा	सूर्य
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

सूर्य 2वर्ष 4मा 23दि

राहु

25/08/2025
25/08/2043

राहु	07/05/2028
गुरु	01/10/2030
शनि	07/08/2033
बुध	24/02/2036
केतु	14/03/2037
शुक्र	13/03/2040
सूर्य	05/02/2041
चन्द्र	07/08/2042
मंगल	25/08/2043

योगिनी

उल्का 2वर्ष 4मा 23दि

पिंगला

25/08/2024
25/08/2026

पिंगला	04/10/2024
धान्या	04/12/2024
भ्रामरी	23/02/2025
भद्रिका	05/06/2025
उल्का	04/10/2025
सिद्धा	24/02/2026
संकटा	05/08/2026
मंगला	25/08/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			26:55:08	मक	धनिष्ठा	2	मंगल	गुरु	---	0:00			
सूर्य			18:03:46	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	मित्र राशि	1.32	मातृ	पितृ	वध
चंद्र			04:40:13	वृष	कृतिका	3	सूर्य	शनि	मूलत्रिकोण	1.43	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			29:06:27	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	शनि	सम राशि	1.56	आत्मा	भ्रातृ	विपत
बुध			21:34:33	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	0.87	भ्रातृ	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		23:42:48	तुला	विशाखा	2	गुरु	शनि	शत्रु राशि	0.88	अमात्य	धन	प्रत्यारि
शुक्र			01:43:18	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	मित्र राशि	0.98	कलत्र	कलत्र	विपत
शनि	व		10:26:38	कर्क	पुष्य	3	शनि	सूर्य	शत्रु राशि	1.60	पुत्र	आयु	साधक
राहु	व		10:23:21	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	सूर्य	सम राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		10:23:21	कन्या	हस्त	1	चंद्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

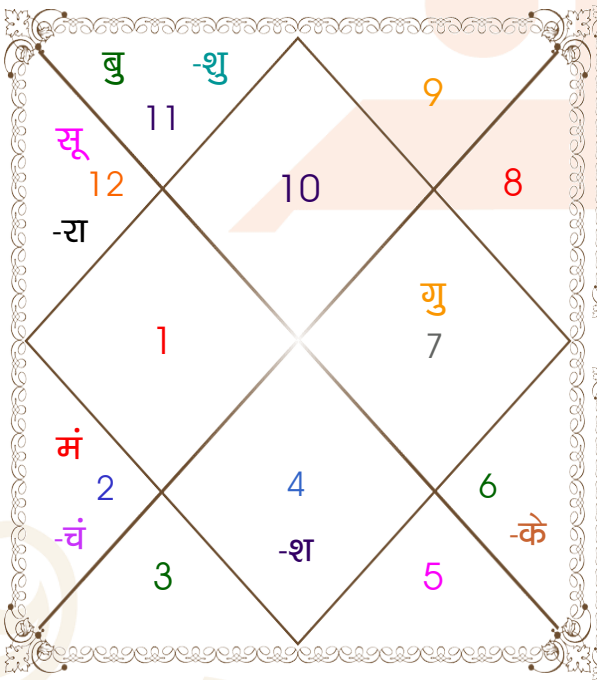

चन्द्र कुंडली

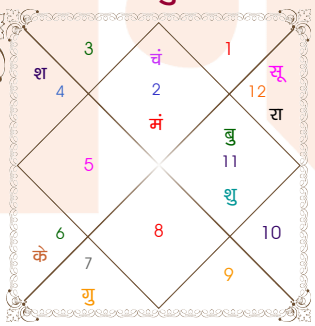

नवमांश कुंडली

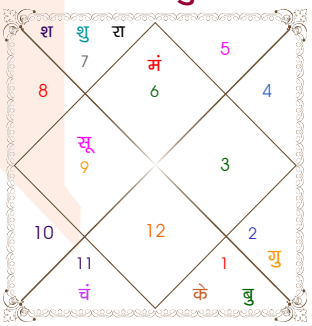

सर्वाष्टकवर्ग

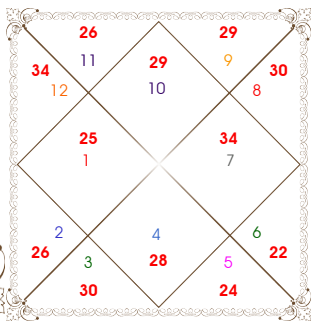

दशमांश कुंडली

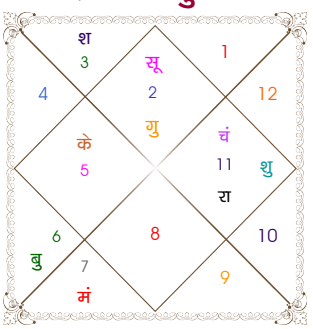

Kusum Garg
202, ICICI Flats, Goregaon East
9327744699
star11@live.in

नक्षत्रफल

आप का जन्म कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र है। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, योनि मेष, नाडी अन्त्य, गण राक्षस तथा वर्ग गरूङ है। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का प्रथमाक्षर "उ" या "ऊ" से प्रारम्भ होगा। यथा- उमेश, उमाशंकर आदि।

सामान्य रूप से आप कंजूस प्रवृति के व्यक्ति होंगे। धन संग्रह में आप कुशलता का परिचय देंगे परन्तु व्यय करने में अत्यन्त ही हिचकिचाहट का प्रदर्शन करेंगे। पापकर्मों या बुरे कर्मों में आप अधिक तल्लीन रहेंगे। आपके अधिकांश कार्यों से किसी को सुख की प्राप्ति नहीं होगी अपितु कष्ट ही पहुँचेगा। आप गहरी नींद में सोना पसन्द करेंगे फलस्वरूप आपके मन में कार्य या परिश्रम करने की इच्छा का अभाव रहेगा। अपने इसी आलस्य के कारण आपको यदा कदा भूख से भी व्याकुल होना पडेगा।

कृपणः पापकर्माश्च क्षुधालुर्नित्य पीड़ितः।
अकर्म कुरूते नित्यं कृतिका संभवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

अधिक मात्रा में भोजन करना आपको रूचिकर लगेगा। आप किसी की बात को सहने में असमर्थ रहेंगे तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध भी रहेंगे। तेज भी आपके चेहरे पर स्पष्ट रूप से रहेगा।

बहुभुक् परदारतस्तेजस्वी कृतिकासु विख्यातः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुभोजन कर्ता, परस्त्रीगमन करने वाला, असहनशील तथा विख्यात होता है।

विद्याध्ययन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा इसे प्राप्त करने में आप सफलता प्राप्त करेंगे। विद्या ही आपका धन होगा तथा इसी के प्रभाव से आप विद्वान कहलाएंगे तथा उच्चाधिकार प्राप्त पद की भी प्राप्ति कर सकेंगे।

तेजस्वी बहुलोद्भव प्रभुसमोडमूर्खश्च विद्याधनी।
जातक परिजातः

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न जातक तेजस्वी, उच्चाधिकार प्राप्त, विद्वान तथा विद्या का धनी होता है।

जीवन में यदा कदा ही आप सत्य का अनुसरण करेंगे अन्यथा असत्य के मार्ग पर ही चलेंगे। इधर उधर बेकार घूमना आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। वाणी भी आपकी कठोर होगी जो श्रोता को अच्छी नहीं लगेगी। कृतघ्नता के अवगुण से भी आप युक्त रहेंगे अर्थात् आप अपने ऊपर किए गयें किसी के भी उपकार को नहीं मानेंगे। अपने कर्तव्यो का भी आप पूर्ण रूप से पालन नहीं करेंगे। अतः घर परिवार वाले अधिकांश असन्तुष्ट ही रहेंगे। धन भी पूर्ण रूप से स्थाई आपके पास नहीं रहेगा।

क्षुधाधिकः सत्यधनैर्विहीना वृथाटनोत्पन्नमतिकृतध्नः।
कठोरवाग्गहितकर्म कृत्स्याचेत्कृतिका जन्मनि यस्य जन्तो।।
जातकाभरणम्

अर्थात् कृतिका में उत्पन्न मनुष्य भूख से पीड़ित सत्य एवं धन से रहित, व्यर्थ ही घूमने वाला, कृतध्न कटुवक्ता तथा अकर्तव्य करने वाला होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

आप वृष राशि में उत्पन्न हुए है। अतः आपका गौर वर्ण होगा तथा गाल अल्प रूप से स्थूल होंगे। आपके नेत्र बड़े बड़े तथा मोटे होंगे। आलस्य का समावेश आपके स्वभाव में रहेगा। उत्तमकुल में उत्पन्न लोगों के आप सेवा करने वाले होंगे तथा इनके प्रति आपकी गहन श्रद्धा होगी। ब्राहमणों तथा गुरूओं का भी श्रद्धापूर्वक आदर तथा सम्मान करेंगे। आपकी प्रवृति वातकफ युक्त होगी तथा बुद्धि पूर्ण रूप से विकसित रहेगी। आप प्रायः सुखी तथा दानशीलता के भाव से युक्त रहेंगे।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप जीवन में सर्वसुखों का उपभोग करने वाले होंगे। शुद्धता तथा सफाई का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा समस्त कार्यों को सिद्ध करने में समर्थवान होंगे। आप पूर्ण रूप से बुद्धि तथा बल से युक्त रहेंगे। धनागम प्रचुर मात्रा में होने से आप विलासी प्रकृति के हो जाएंगे तथा

सभी भौतिक सुखों पर उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगे। तेजस्विता आप पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। आपके सभी मित्र अच्छे आचरण तथा सद्गुणों से युक्त होंगे तथा मित्रता भी आपकी दीर्घकाल तक चलेगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका मुखमंडल तथा जानुभाग दीर्घाकार होंगे। आपके जीवन के प्रथम दो भाग परिश्रम तथा कष्टपूर्वक व्यतीत होंगे तथा अन्तिम दो भाग सुखी तथा आनन्दपूर्वक व्यतीत होगे। स्त्री वर्ग से आपका विशेष आकर्षण रहेगा। त्याग की भावना से भी आप युक्त रहेंगे। आपकी प्रवृति क्षमाशील होगी तथा सामान्य गलतियों और अपराधियों पर किसी को भी क्षमादान प्रदान करेंगे। प्रारम्भिक अवस्था में आपको कष्ट सहना पड़ेगा तथा अत्यन्त कठोर परिश्रम भी करना पड़ेगा। आपकी पीठ, चेहरे या काख में तिल, मस्से या चोट का निशान हो सकता है।

पृथूरुवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपके पुत्रों की अपेक्षा कन्याएं अधिक संख्या में होंगी तथा आपका आचरण तथा व्यवहार श्रेष्ठ रहेगा। आप आजीवन धन का उपभोग करेंगे तथा आपकी कीर्ति दूर दूर तक फैलेगी।

दाताकान्त यशोधनोरुचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल वक्षस्थल से युक्त तथा घने काले घुंघराले बालों वाले होंगे। सैक्स के प्रति आप अधिक ही आर्कषित रहेंगे। आपका यश चारों तरफ फैलेगा। आपकी आखें बड़ी एवं मोटी होंगी। आपकी बुद्धि न्याय प्रिय होंगी तथा सही गलत का फैसला पुष्ट रहेंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप मन्दगति से चलना पसन्द करेंगे तथा अपने समस्तकार्यों को दक्षता से पूर्ण करेंगे। आप अपने भरसक प्रयत्न से अन्यजनों की भलाई करने का भी प्रयास करेंगे। अच्छे तथा पुण्य के कार्य आप सदैव करते रहेंगे तथा इन्ही से हमेशा सुखी जीवन व्यतीत करेंगे।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा। मुखमंडल की विशालाकृति होगी तथा आप सविलास गमनप्रिय प्रकृति के होंगे। कष्टों को आप सहन करने में समर्थ होंगे तथा उच्चाधिकारों से सम्पन्न होंगे। धन एवं ऐश्वर्य से आप जीवनपर्यन्त समृद्ध रहेंगे। आपके अन्दर जठराग्नि की प्रबलता रहेगी। स्त्री वर्ग में भी आप लोकप्रिय रहेंगे। तथा युवा एवं वृद्धावस्था में सुख की प्राप्ति करेंगे। साथ ही आप सुन्दर स्वभाव वाले तथा विष्णु एवं शिव के आराधना करने वाले भी होंगे।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आपका जन्म राक्षस गण में हुआ है। अतः आप कभी कभी अधिक बातें बोलेंगे। हृदय में भी आपका दया का भाव अल्प रहेगा। आपको क्रोध अधिक आएगा तथा छोटी छोटी बातों पर आप उत्तेजित हो जाएंगे। अपने कार्य सिद्धि के लिए आप किसी भी कार्य करने के लिए तैयार हो जाएंगे। बल का आपके पास अभाव नहीं रहेगा। लेकिन आप सबसे वाद विवाद करते रहेंगे। इससे अन्य लोग आपको अच्छा नही समझेंगे फलस्वरूप आपका अधिकांश लोगों से विरोध रहेगा। अतः संयमपूर्वक आपको अन्य जनों से वार्तालाप करना चाहिए जिससे किसी भी प्रकार से अप्रिय स्थिति उत्पन्न न हो सके।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही चेहरे की सुन्दरता भी मध्यम होगी। कभी कभी आप ऐसे कटु शब्दों का प्रयोग करेंगे कि सुनने वाले देखते ही रह जाएंगे। इसलिए अपने सम्भाषण में यत्नपूर्वक मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मेष योनि में जन्म लेने के कारण आप अत्यन्त उत्साही पुरुष होंगे जो कार्य करेंगे उसे उत्साह पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप योद्धा तथा पराक्रमी पुरुष होंगे तथा कठिन से कठिन

कार्य करने में समर्थ होंगे। धन ऐश्वर्य से आप आजीवन युक्त रहेंगे। नैसर्गिक रूप से परोपकार की भावना आपके मन में रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक आप उसे पूर्ण करेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोडकर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको

आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

आपके लिए मार्गशीर्ष मास, पंचमी, दशमी, पूर्णमासी, अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, चतुर्थ प्रहर तथा कन्या राशिस्थ चन्द्रमा यह समय अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य पंचमी, दशमी, पूर्णमासी तथा अमावस्या में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन आदि कोई भी शुभ कार्य न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, चतुर्थ प्रहर या शनिवार को शुभ कार्य में वर्जित रखें। इस समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए खराब समय चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि अथवा नौकरी में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय पर आपको शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल, शहद इत्यादि पदार्थों का दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के 20 हजार जप करवाने चाहिए। इससे अशुभ फलों में कमी होगी तथा आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।